



तुम्हारे जाने के बाद

~ कवि ~

अरुण आजाद

BFC PUBLICATIONS



BFC PUBLICATIONS



प्रकाशक:

BFC Publications Private Limited
CP -61, Viraj Khand, Gomti Nagar,
Lucknow – 226010

ISBN - 978-93- 5509- 218-2

कॉपीराइट (©) अरुण आजाद (2021)

सभी अधिकार सुरक्षित।

प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग की न तो प्रतिलिपि बनाई जा सकती है, न पुनरुत्पादन किया जा सकता है और न ही फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग सहित किसी भी माध्यम से अथवा किसी भी माध्यम में, किसी भी रूप में प्रेषित या पुनःप्राप्ति के उद्देश्य से संरक्षित किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति जो इस कार्य के प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनधिकृत कार्य करता है, क्षति के लिए कानूनी कार्यवाही और नागरिक दावों के लिए उत्तरदायी हो सकता है।

इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और प्रदान की गई सामग्री पूरी तरह से लेखक की है और प्रकाशक द्वारा सद्भाव में प्रस्तुत की गई है। सभी नाम, स्थान, घटनाएं और घटनाक्रम या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से उपयोग की गई हैं। कोई भी समानता विशुद्ध रूप से संयोग है। लेखक और प्रकाशक इस पुस्तक की सामग्री के आधार पर पाठक द्वारा की गई किसी भी कार्यवाई के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। इस कार्य का उद्देश्य किसी भी धर्म, वर्ग, संप्रदाय, क्षेत्र, राष्ट्रीयता या लिंग की भावना को ठेस पहुंचाना नहीं है।

अब !

हमारी आँखों के ख्वाब जुदा हो गये है

जो पहले मेरे खुदा थे,

किसी और के खुदा हो गये है

रूह से निकला हूँ जिस्म की तलाश में हूँ

जिंदा तो हूँ मगर लाश में हूँ

ये

नर्से काटना

फाँसी लगाना

ज़हर पीना.....

इनसे भी बुरा है

तुम्हारे बगैर जीना.....

उसके जाने पर, मैं खुद को खोता रहा..

दिन रात बीतते रहे, मैं रोता रहा ..

ज़बान, दिल दिमाग सब कही है वो ...

ऐसा लगता है जैसे यही है वो

ये मत सोचना की हमने तुम्हें याद नहीं किया

हाँ ! ये है की रोये और आवाज़ नहीं किया

अगर तुम वही हो जिसे मैं जानता था तो देख पाओगी

निशान आंसुओ के जो मैंने कभी साफ़ नहीं किया

मेरी मज़बूरी, मेरी बेबसी समझा जाय ...

मैं किसी और का हो जाऊ तो खुदखुशी समझा जाय ...

जाने कैसे ? कई साल, इक पल में भुलाने को कहते है लोग
इधर की बात नही करते, उधर मान जाने को कहते है लोग
तहखाने मे कही छुपाये बैठे है सब टीस, अपने अपने दिलो में
मुँह पर सब कुछ खुल के बताने को कहते है लोग ॥

बड़ी तकलीफ़ है सासों में उसके सांसो के बगैर
चेहरे पे शिकन है रूआंसो के बगैर
मर जाता, बड़ा आसान था मेरे लिए
सोचना ये था, कैसे मरता ? तुम्हारे एहसासो के बगैर

ये ...चेहरे पर उदासी ले आया है ।
इसके...जहन में ज़रूर कोई याद आया है ॥

इस दौर में इश्क करना आसान नही होता ।
आदमी ज़िदा भी होता है और जान नही होता ॥

कंधे पर हाथ रखेंगे, गर्दन पकड़ लेंगे ।
तुम दुखड़ा बताओगे, तुम्हे शब्दो में जकड़ लेंगे ॥

तन मन धन हार आये है ।
दीवाने होकर घर हार आये है ॥

पेन है वो, मै स्याही बनने की कोशिश में हूँ ।
स्थिर पानी था ,राही बनने की कोशिश में हूँ ॥

मोहब्बत में दुश्मन, नयी बात नहीं ।

जमाना यही करता आया है
क्या कल क्या आज नयी बात नहीं ॥

मै अभी हूँ, उसे ये इत्तला कर दिया जाय
वक्त माँग के शिकवा गिला कर दिया जाय
गर पतंग कि चाहत है कि आसमान तक उड़े
तो मांझा तो थोड़ा ढीला कर दिया जाय

नाम जिनके नागफनी है
फूल उन पौधो पर भी तो खिलते रहते है ।
और क्या हुआ ? जो वो अलग हो गयी !
हम तो वही है,अब भी उसकी गली से निकलते रहते है ॥

रोकते रोकते ये मोहल्ला, ये ज़माना कितना रोक लेगा ।
क्या मेरा उसकी गली से निकलना रोक लेगा ॥

लिखूंगा चिट्ठियां आँखो से, आँखो तक पहुँचाँ के आऊँगा ।
मै था जैसे वैसा नही रहा, अब इतना तो बता के आऊँगा ॥

इश्क में दरके लोग अब खुदा के सहारे है...
कितने बदल गये
जो तालाबो से डरते थे वो दरिया के किनारे है ...

तुम्हे देखने को हम क्या क्या नहीं कर रहे
तुम्हारा नम्बर है बस तुम्हे कानटेक्ट नहीं कर रहे ..
ये वहम दुनिया वालो को कि भूले है तुमको हम
याद बहुत आती है तुम्हारी बस किसी से ज़िक्र नहीं कर रहे..

मोहब्बत का कुछ भी पता नहीं
कांच की तरह है , एक ठोकर से टूट जाते है

मोहब्बत के हारे है
सब बेचारे है

बंधे होते किसी की चुन्नी सेतो यू न फिसलते
मसला ये है की सब कुवारे है ।

वैसा ही हूँ जैसा छोड़ के गयी थी तुम
ना नेचर बदला नै मै खुद बदला

कभी भी आ सकता है फ़ोन तुम्हारा
इस उम्मीद में मैंने नंबर नहीं बदला।

तुम सो जाना चुपके
विडियो कॉल करके

मैं रात भर
तुमको देखता रहूँगा।

सरकारी नौकरी

तुम्हारे या मेरे होंठो पर नाम आ जायेगा जिस दिन
अपने परायो का पहचान हो जायेगा उस दिन

बड़ा सिर पर हाथ रखकर कहते थे कहने वाले
दुश्मन हो गए है हमारे, हमको अपना कहने वाले

मेरे उसके बीच की दूरी थी सरकारी नौकरी
गला घोट गयी मोहब्बत की सरकारी नौकरी

चलो ! सबके कहने पर जिस्मो को किसी के हवाले किया जाय
मेरी पहली ख्वाहिश तुम थी फिर थी सरकारी नौकरी

न जाने क्या है किसी का मुलाजिम होने में
अक्सर मुहब्बत ब्याह ले जाती है सरकारी नौकरी

मेरी मोहब्बत भी मेरी हो जाती
पास मेरे गर सरकारी नौकरी हो जाती

यहां सब अपने हैं, चेहरो से
मदद माँग रहे हो, बहरो से
प्यासे हो, तो कुआँ ढूँढो
क्यों? उम्मीद लगाये हो सागर के लहरो से ।

भला खारा पानी, प्यास बुझायेगा क्या?
उसके बिना तू, मर जायेगा क्या?
और जो कहती थी कि
बड़ी मिन्नतो से भरी है कोख मेरी
मरने के बाद मुँह दिखला पायेगा क्या?

तुम्हारा साथ मिला था
तो उड़ने का मन होता था
तुम्हारे बिना पर टूटे से लगते हैं....

मुद्दतो से एक उम्मीद थी
अब ओझल लग रही है....
जिंदगी तुम्हारे बिना
अब बोझिल लग रही है

इश्क में हारा हुआ, हताश शायर
दर्द लेके मुस्कुराता हुआ, निराश शायर
किसी से वादा करके टूट जाने पर जो टूटे
चलता फिरता है एक लाश शायर ॥

ये लोग
जो बताओ बताओ कहते हैं, कहने दो ना ।
खुशियाँ मैं बाट लूंगा बेहिचक तुमसे
गम मेरा है मेरा रहने दो ना ॥

तुम्हारे काटे नंघोटे बड़े याद आते है
उन यादों को समेटे यादें, बड़े याद आते है ।
एक रोज़ मैने यूं ही कहा कि औरतो पर गहने मुझे पसंद नही
फिर तुम्हारा बिना गहनो के मिलना, बड़े याद आते है ॥

नींद को खोकर, ख्वाब को पाना चाहा
कांटो पे चल, मोहब्बत को निभाना चाहा.....
रुठ जो गये चंद लोग हमारी मोहब्बत से
खुद को अलग कर उन सबको मनाना चाहा

तुम्हारे बिना, किसी के साथ हो जाऊँगा मै
पर खुद को तन्हा ही पाऊँगा मै ,
और उतरेंगी बधाईया जो मेरे मैसेज बाक्स मे
महसूस नही, बस पढ़ ही पाऊँगा मै ॥

हम टूटे तो ऐसे टूटे
कि समेटा नहीं जा रहा था

मंम्मी का चाँद था मै ,
उसके लिए तारो की तरह बिखर गया था ॥

रो रो के बुरा हाल है मेरा
वो मेरी क्यों नहीं ??
बस! खुदा से यही सवाल है मेरा ॥

वो मेरे साथ रहती थी
और मुझमें खो जाती थी
मेरे बाजुओं पर रख कर सिर
बच्चो की तरह सो जाती थी

उसके माथे पर
मैं हाथ फिराया करता था
लगता था
खुदा पास आया करता था

अब मोहलते हैं कहाँ उसको मेरे पास होने का....
एक दर्द मिला है सहने का, छुप छुप के रोने का

मंदिर मस्जिद में तेरे लिए दुआएं मांगी
बस एक गले में "ताबीज़" का आना ना हुआ

कितनी समझदारी से जुदा हो गये हम
बेवफाई का कोई बहाना ना हुआ

ये ! आसमानी तारे तो है नही ?
जो ज़मीन पर आया करते है
फिर कौन है ये लोग ?
जो टूटते है, मुस्कुराया करते है ।

वो लोग जो
मोहब्बत में दूर है ...
बहुत मज़बूर है ...

काले पानी से कम नहीं,
हर किसी के बस का नहीं होता ...

बड़े बदनसीब है वो लोग
जिनके साथ मोहब्बत का हादसा नहीं होता ...

समंदर की गहराई, लहरो मे समायेगी नहीं
ये दिल टूटने का दर्द है, चेहरे पे आयेगी नहीं ॥

जो अकेले हो गये है परिंदे जोड़ो के
खुद को ढाँढस बंधाया करते है ।
तुम देखकर जान नही पाओगे
पागल है! सबके लिए मुस्कराया करते है ॥

दिल, दिमाग, आँखों, कानो को उसका तलब रहता है ।
हार चुका है मोहब्बत मे, अब ये ! सबसे अलग रहता है ॥

तुमसे दूर होने को सोच कर
मेरे अन्दर जो आसुओं का सैलाब उठता है
वो बस मेरे कमरे और मुझ तक रह जाता है ॥

कई साल मिलकर ख्वाब सजाया था
सब टूटे से लगते है
कई दिनो से उनका फोन नही आया
अब रूठे से लगते है

मेरा विश्वास आसमान था, ज़मीन हो जाता
वो एक बार फोन करके कह देती
कि मै तुम्हे भूल गयी, तो यकीन हो जाता ॥

बड़ा आसान होता है, किसी को भूल जाना ॥
इसकी बाँहो से निकलकर, उसकी बाँहो में झूल जाना ॥

मैं उतना बुरा नहीं
जितना मेरे बारे में बताया गया है
ये जो फैला है "अफवाह"
सब ..सब बनाया गया है

उसमें इतना घुला हूँ
उसके शहर से गुज़रता हूँ
तो सुकून मिलता है ...

इश्क में मेरे उसकी कहाँनिया बहुत है
जिस्म से लेके जान तक निशानिया बहुत है ॥

दिल का जो दर्द है, इस दुनिया में इसका भी मरहम है क्या ?
खामोशी के साथ जुदा हो जाना, मर जाने से कम है क्या ?

लड़ के तुमको खोता
तो अच्छा होता
घुट घुट के खो रहा हूँ...

तुम कहती थी ना
कोई जुदा करेगा तो आग लगा देना
अब मैं खुद राख हो रहा हूँ

तुम आईना थी मेरा
तुम्हारे टूटने से डरता हूँ
दोस्तों की महफ़िल में, खुल के हँसी आ जाये
तो रो पड़ता हूँ।।।।

अपने गम पर, मुस्कुराहटो का आकार रखो ।
इश्क में हो, तो दर्द के लिए खुद को तैयार रखो ॥

बड़े दिनो से उससे बातें नहीं हुयी
अब शिकवे गिले भी नहीं होते ...
ये दर्द उतना खलता ना
अगर उससे मिले नहीं होते

इश्क में टूटें हुए है हम
किसी को बताना गवारा नहीं लगता

वो शख्स जिस पर कल तक अधिकार था
अब वो ही हमारा नहीं लगता

मेरे और उसके ख्वाबों में ज़रा सा अन्तर ना था ...
इश्क के दुश्मनो पर, इसका भी असर ना था

बड़े दिनो बाद सुकून मिला
उसे गले लगाकर
पागल रोने लगी
मेरी बाहों में आकर

सहेजी है तुम्हारी यादें
अपने यादों के बागीचे में ।
जब दर्द होता है
औषधि का काम करती है ॥

क्या कहा ? वो आयी है
अबे जाने दो... अब परायी है ...

बहुत रह चुका सरकारी प्रापर्टी, अब किसी का निजी होना चाहता हूँ।
तुम्हारी आगोश में आके, तुम्हारे इश्क में बिजी होना चाहता हूँ ॥

मेरी जिंदगी में नहीं आयी
तो क्या दफ़ा कह दू उसे ?
इश्क मुकम्मल ना हुआ,
तो क्या बेवफ़ा कह दू उसे ?

उसे मेरे इश्क पर शक हो
मैं चाहता हूँ, उसे इतना हक हो

मैं थक गया हूँ,
शिलाओं पर तुम्हारी यादों के निशान बना-बना के.....
आदत खराब कर दिया है तुमने, मुझे गले लगा-लगा के.

अल्फाज़ों की ज़रूरत नहीं है मोहब्बत में,
यहाँ कहना, सुनना सब आँखों से होता है.....

तुम्हे तो मालूम ही होगा, सितम उसका
आखिर तुम्हे भी तो है गम उसका ..

एक दिन के खातिर
उस आसमानी चाँद से बड़ा हो जाऊ क्या?
छलनी के पार,
उसकी नज़रो को मेरा इंतज़ार होगा ...
सोचता हूँ छत पर जाके खड़ा हो जाऊ क्या ?

सभी कोसभी से शिकायत है ।
एक हम है , जिनको हमी से शिकायत है ॥

अंगूठी तो फ़ेक दी तुमने
अब अँगूठियों के निशान देखते रहते हो

"मेरे दिल में तुम्हारे लिए जगह नहीं "
ना जाने क्यों ये तुम मुझसे झूठ कहते हो....

यादों को मिटा के ,
सारे ख़तों को जला दू क्या ?

अब तुम ना रही ज़िंदगी में मेरे
तो खुद को ख़ुदा से मिला दू क्या ?

सब चाहते है, कि मै अपनी जान से खफ़ा हो जाऊ....

छोड़ दू उसे, उसकी नज़रो में बेवफ़ा हो जाऊ ...

वो अपने लबो पर मेरे लबो का सुरूर चाहती है..

एक तमन्ना है उसकी

अपने माँग मे मेरे हाथ का सिंदूर चाहती है ...

कसम खायी थी वादा निभाने की, तोड़ नहीं सकते..
उसे गवारा हो तो चली जाये, हम छोड़ नहीं सकते ...

सुनो ! कुछ खाली सा लगता है
जैसे नदियों में पानी ना हो
आसमान बिना चाँद और सूरज के हो
किताबें ,डायरिया बस कोरा कागज हो
सच में ! कुछ खाली सा लगता है ॥

हर धुन कर्कश लगती है
हर भीड़ नागवारा गुजरता है
जैसे खाना बिना स्वाद का हो
रंगो का अपना कोई असतित्व ही ना हो
सच में ! कुछ खाली सा लगता है ॥

इंतज़ार है !
कब गुस्सा होगी
कब हँसोगी
कब छेड़ोगी
सच में ! कुछ खाली सा लगता है , तुम्हारे बिना ! ॥

मुझसे रूठने की वजह तो बता दे ।

मेरे बिना कहा रहेगी वो जगह तो बता दें ॥

ज़िदगी की ख्वाहिश ये है

कि तुम शायरी भी पढ़ो..... तो मेरी लिखी हुयी ।

मैं सब कुछ देख सकता था

बस

उसकी आँखों में आसूँ नहीं देख सकता था

छोड़ दिये बुरे काम, जो उसे पसंद नहीं थे

मैं उसके अल्फाज़ों का तौहीन नहीं कर सकता था....

कितना साथ रहेगा "अरूण" ये पता भी नहीं था

फिर भी सब कुछ किया जो कर सकता था.....

मेरे साथ रहता तो अच्छा होता हमारे लिए

मैं हर दिन उसे खुदा कह सकता था

रदियाँ

कल रदियाँ जलाने चला तो याँदे मिली

कई किताबे मिली

एक फूल था,

एक शायरी थी ,

एक दिल को चीरते हुए निशान था

उसपे लिखा दो नाम था ..

कल रदियाँ जलाने चला तो याँदे मिली ।

दिल वाली कलाकारी भी उसी की थी

गुलाब उसी का था

शायरी उसी की थी

मेरा बस वो तीर का निशान था

जिस दिल पर लिखा दो नाम था

कल रदियाँ जलाने चला तो याँदे मिली ।

बस यू ही मज़ाक था

सब ख़ाक था

जो सोचा ना था कभी

वो हो गया था ,

ज़िंदगी की कशमकश में
वो खो गया था ...
गर रूबरू होता कल से
तो मज़ाक मे भी मज़ाक ना करता
कल रदियाँ जलाने चला तो यादे मिली ॥

मेरी आदतों मे शुमार हो तुम ...

लोग कहते है , बीमार हो तुम ..

मैं खामोशी तेरे मन की, तू अनकहा अलफ़ाज़ मेरा

मैं एक उलझा लम्हा, तू रूठा हुआ हालात मेरा ।

तुम्हारे जाने के बाद

ना जाने क्या होने लगा

मैं शरीफ़ था

शराबी होने लगा ...

इन लोगो ने अधमरा कर के छोड़ा है ।
पूरी कायनात लग गयी फिर जुदा करके छोड़ा है ॥

हम किसको बता कि क्यो रो रहे है.....
यहाँ सब अपने अपने हाल पे रो रहे है...

उसकी मुस्कान में भी उसका दर्द देख सकते हो
तो हाँ ! तुम उसके हो

तुम्हारा होना है मुझे
चिल्ला चिल्ला के रोना है मुझे

किनारों पर लहरे खूब टकरायी होगी
सुकून तब भी ना उनके ज़हन में आयी होगी

बाहर कितना खामोश है ये
अन्दर इसके कोलाहल होगा

सब पूछते है, तो बताता नही
शायद इसका कोई ना हल होगा

सपने देखने वाली आंखों में
आँसू भर भर के है
छोड़ो क्या बताना
सब अपने ही घर के है

नादानिया बहुत थी उसमें ...
बताने वाले बताते है ,
अब समझदार हो गयी है वो

तुमपे लिखते बहुत है
अकेले में पढ़ते बहुत है
आलमारी खंगाली यादों की
यादों में मिलते बहुत है ...

कितना रोता हूँ मैं ये बताये भी तो किसे
ज़ख्म भी ज़ख्मी है दिखाये भी तो किसे
बांधो ने आँखों में पानी का सैलाब रोक रखा है
बह भी जाये तो क्या होगा, नज़र आये भी तो किसे...

रूह के करीब ,जिस्म से दूर थी वो.....
किसी और की हो गयी,
बेवफा नहीं, मज़बूर थी वो

नाखूनो में पालिश लगाने ,बालों में खेलने के सिवा
बहुत काम था मुझमें उसके लिए , लड़ने के सिवा ...
हम गले लगे तो लगा कयामत तक जुदा नहीं होंगे अब,
रूह एक है, जिस्मों के अलग हो जाने के सिवा ..

कमीने, पागल, बदतमीज़ ना जाने क्या क्या कहती थी वो..

मोहब्बत में जो भी कहती सब दुआ कहती थी वो...

निशान छोड़े है उसने आंसुओं के, मेरे कंधे पर
इस घर में कोई और नहीं रहेगा, जहाँ रहती थी वो...

अपने ख़त में, उसने हमारी ख़ता लिख के भेजी है

बिछड़ने को ही, हमारी सज़ा लिख के भेजी है ।

ज़माने को लगता है, हम मर्जी से अलग हुए

इतनी नेकदिल है वो कि,

दुश्मनो को भी ख़त में दुआ लिख के भेजी है ॥

लोग बिछड़ जाते हैं फिर भी

पुराने रिश्ते ख़त्म नहीं होते....

हम मिलते तो हैं अक्सर

बस मिलकर हम नहीं होते

इश्क में भीगने से जो डर जाया करते है ।
उनके ख्वाहिशों की नाव डूब जाया करती है ॥

अकेला ही लहरो से लड़ने की कोशिश में है
जिम्मेदारियों से लदा है फिर भी चलने की कोशिश में है

इरादा कर लिया, तो क्या डर जायेगा
जिद्दी है, दरिया में उतर जायेगा

मौसमी हैं ये रूकावटे, आती जाती रहती है
तू लड़ तो सही, इनकी ताकतें बनावटी रहती है

मोहब्बत में हारे हुए हो
तो किस्सा सुनाओ ना

किसी से धोखा खाये हुए हो
तो यहाँ बताओ ना

ये महफिल लगी ही है
बेरोज़गार आशिको के लिए

मैं अपनी सुना रहा हूँ
तुम अपनी सुनाओ ना ॥

बिना मंजिल के ही सफ़र में हूँ
खामोश हूँ फिर भी ख़बर में हूँ
दवा नहीं हूँ किसी के घाव का मैं
फिर भी कहती है, तुम्हारे असर में हूँ ।

मयखाने में बस, सब कुछ मिटाया जा सकता है
ये अफ़वाह है , कि उसे भुलाया जा सकता है
ज़ोर का कश, दो घूट लेता है हर कोई
यहाँ पी पी के रोता है हर कोई

खुद को खुद से मुख़ातिब नहीं कराता
किस्मत से इतना डर लगता है
कि आईने के सामने नहीं जाता

सज़ती है महफ़िलें मेरे ही सजदे में

किससे क्या कहूँगा तुम्हारा ज़िक्र होने पर
इसलिए महफ़िलो में नहीं जाता

कुछ एक आध लोगो के एहसान की ज़रूरत है....

जो खिलाफ है उनसे गुज़ारिश है, रहम करे
हमारे हक की सोचे मुझे मेरी जान की ज़रूरत है

सामने बड़ा सुलझा सा रहता हूँ मैं
मेरे अन्दर देखोगे तो उलझा उलझा रहता हूँ मैं

हारते हारते सब कुछ हार जाऊंगा
पहले तुम्हे फिर जिंदगी हार जाऊंगा |
अब न बांधिए किसी का आँचल मेरे कुरते से
बड़ा बदकिस्मत हूँ ये जुग भी हार जाऊंगा ||

मैं खामोशा रहा उसकी आबरू के लिए, कही खो न दे ...
सामने उसके रोया नहीं मैं, कही वो रो न दे ..

मयखाने में बस, सब कुछ मिटाया जा सकता है
ये अफ़वाह है की उसे भुलाया जा सकता है
ज़ोर का कश, दो घुट लेता है हर कोई
यहाँ पी पी के रोता है हर कोई

कोई चिट्ठी, कोई खबर, कोई अखबार नहीं चाहिए |
रोज़ हो दीदार तेरा, हमे कोई इतवार नहीं चाहिये ||

काश कि कुछ ऐसा हो जाता
उसके घरवाले मान जाते, सब अच्छा हो जाता

तिनके का बहाना है, जो आँखो मे तैरा हुआ है
मेरी आँखो में पूरा समंदर ठहरा हुआ है

बीमार होता हूँ, तो दवायें नही खाता
कोई मेरा अपना मुझसे बिछड़ा हुआ है

वेंटिलेटर पर हूँ आक्सीजन की ज़रूरत है
उससे कह दो कि फ़ोन करके हैलो कह दे

मैं सब कुछ देख सकता था

बस

उसकी आँखों में आसूँ नहीं देख सकता था

छोड़ दिये बुरे काम, जो उसे पसंद नहीं थे

मैं उसके अल्फाज़ों का तौहीन नहीं कर सकता था....

कितना साथ रहेगा "अरूण" ये पता भी नहीं था

फिर भी सब कुछ किया जो कर सकता था.....

मेरे साथ रहता तो अच्छा होता हमारे लिए

मैं हर दिन उसे खुदा कह सकता था

सोचा था किसी दिन ले चलेंगे उसे
बैठेंगे सरयू की घाट पर..
खेलेगी पानियो से
खिलखिला के हसेगी मेरी हर बात पर ..

सोचा था
नाव के सहारे साथ हम नदी के पार जायेंगे
हे राम !
क्या तुम्हे मालूम था ? हम इश्क में हार जायेंगे ?

है नहीं राम से गुण मुझमे, मै ये जानता हूँ ...
पर जैसे तुम करते थे प्रेम सीता को,
मै भी उसे वैसा ही मानता हूँ

करो मुझपे कृपा
कहो हनुमान से शक्ति दिखाये ...
बैठना है हमें साथ में सरयू किनारे
वो उसे कही से ले आयें

होती है विरह कैसी ?
ये बेहतर तुमसे जानता कौन है.....
अब रहे खामोश तो सब फिर कहेंगे
देखो ! राम तुम्हारा मौन है

हे राम ! करो न्याय
मुझे मेरी प्रेयसी के साथ होने का वचन दो ...
ना दे सको मुझे साथ उसका
तो बहुत चुका अब अपने चरणों में शरण दो.....

अब इससे भी ज़्यादा क्या बुरा होगा अरुण ।
जो तुम्हारा था किसी और का होगा अरुण ॥

मैं बुरा होता
तो इतना बुरा ना होता
मैं अच्छा था
तो सब बुरा होता चला गया
